केरल में महापाषाणकालीन स्थल

स्रोत: द हिंदू

चर्चा में क्यों?

हाल ही में केरल में **वर्षा जल संचयन परियोजना के** परिणामस्वरूप बड़ी संख्या में **महापाषाणकालीन कलशों की खोज हुई।**

- **यह खोज नेनमारा वन प्रभाग** में **कुंडलक्किकड़ पहाड़ी** (जिसे मालमपल्ला या **मलप्पुरम पहाड़ी के नाम से भी जाना जाता है)** पर हुई।
- कलश **दफन** में मृत व्यक्ति के **अवशेषों को मृद्भांड या कलश** में रखकर दफना दिया जाता था।

महापषाणकालीन कलशों के दफन स्थल की खोज से संबंधित प्रमुख तथ्य क्या हैं?

- **पारंपरिक कलश अंत्येष्टि: पहाड़ी के शीर्ष पर स्थित अंत्येष्टि स्थलों में कब्रों के ढेर**, कब्रगाह, तथा पाषाणयुक्त अंत्येष्टि स्थल पाए गए हैं ।
  - **2,500 वर्ष से भी अधिक** प्राचीन इन कलशों की उपस्थिति, पहाड़ी स्थल के लिये दुर्लभ है।
- **कलश की विशेषताएँ:** इस क्षेत्र में विभिन्न प्रकार के **मृद्भांडों के टुकड़े पाए गए, जिनमें काले मृद्भांड, लाल मृद्भांड तथा काले और लाल मृद्भांड शामिल हैं।**
  - **हालाँकि एक उल्लेखनीय खोज में उंगलियों के निशान** वाला एक कलश, तथा लघु मृद्भांड शामिल हैं जिन पर **डोरी के निशान बने हुए हैं, जो** मृद्भांडों में प्रयुक्त विशिष्ट **सजावटी तकनीकों का संकेत देते हैं।**
  - पहाड़ी के शीर्ष पर **छेनी के निशान पाए गए, जिनसे यह संकेत मिलता है कि गोलाकार पत्थरों को** छेनी का उपयोग करके बनाया गया था।
    - इससे इस क्षेत्र में **दफन स्थल के निर्माण के लिये** अधिक **संगठित** दृष्टिकोण का पता चलता है।
- **खोज का महत्त्व:** यह खोज **मध्यपाषाण काल** (इस स्थल पर **सूक्ष्मपाषाण काल** की उपस्थिति के कारण) **और** केरल में लौह युग के बीच संबंधों के बारे में महत्त्वपूर्ण **जानकारी प्रदान करती है।**
  - पुरातत्त्वविदों के अनुसार, **मध्यपाषाण और लौह युग के अवशेषों का ऐसा संयोजन** असामान्य है।

महापषाणकालीन संस्कृति क्या है?

- **महापषाण का परिचय:** महापषाण से तात्पर्य **बड़े पत्थरों से बने स्मारकों से है**। अधिकतर मामलों में महापषाण निवास क्षेत्रों से दूर स्थित **दफन स्थल हैं।**
- **महापषाण का कालक्रम: ब्रह्मगिरी उत्खनन** के आधार पर दक्षिण भारत में महापषाणकालीन संस्कृतियों का काल **तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व और पहली शताब्दी ईस्वी** के बीच माना जाता है।
- **भारत में महापषाण का भौगोलिक वितरण:** महापषाणकालीन संस्कृति का मुख्य संकेंद्रण **दक्कन में है**, विशेष रूप से **गोदावरी नदी के दक्षिण में**।
  - **हालाँकि इसके अवशेष पंजाब के मैदानी भाग**, **सिंधु-गंगा बेसिन**, **राजस्थान**, **गुजरात** और जम्मू एवं कश्मीर के **बुर्ज़होम में भी** पाए गए हैं।
  - इसके महत्त्वपूर्ण स्थलों में **सरायकला (बिहार), खेड़ा (उत्तर प्रदेश), देवसा (राजस्थान)** आदि शामिल हैं।
- **दक्षिण भारत में लौह का उपयोग:** दक्षिण भारत में महापषाण काल एक पूर्ण लौह कालीन संस्कृति थी, **जहाँ लौह प्रौद्योगिकी** के लाभों को पूर्ण रूप से उपयोग किया गया था।
  - **विदर्भ के जूनापानी से लेकर** तमिलनाडु के **आदिचनल्लूर** तक **लौह वस्तुएँ** जैसे **शस्त्रों** और **कृषि उपकरण** पाए गए।
- **निर्वाह पद्धति: वे कृषि, शिकार, मत्स्याग्रह और पशुपालन** के संयोजन पर जीवन यापन करते थे ।
- **शैल चित्र:** महापषाण स्थलों पर पाए गए **शैल चित्रों में शिकार**, **पशु आक्रमण** और **सामूहिक नृत्य के दृश्य दर्शाए गए हैं**।

//

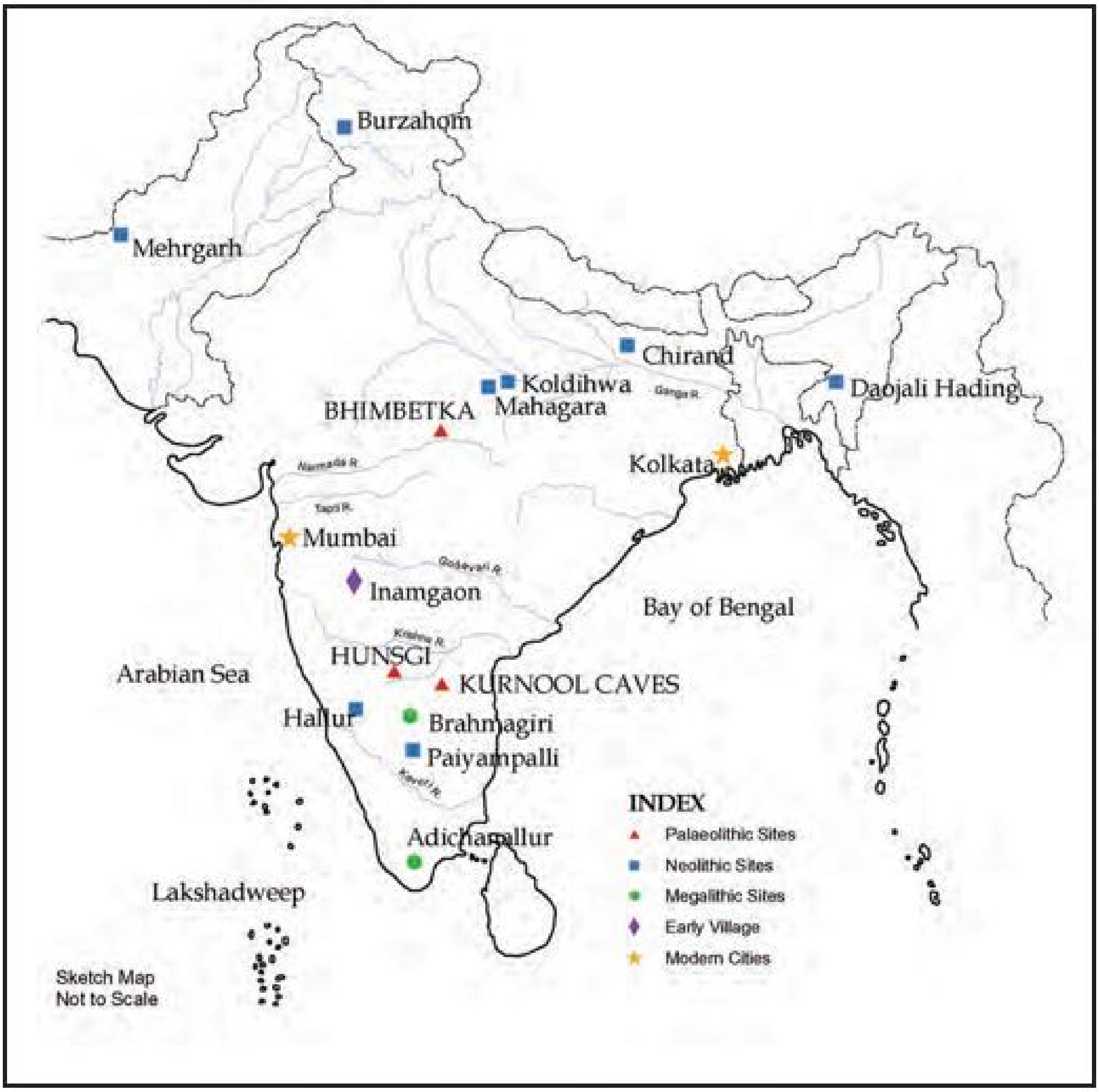

MAP: Some Important Archaeological Sites

नोट:

- **मध्य पाषाणकाल लगभग 12,000 वर्ष पूर्व** से आरंभ होकर **लगभग 10,000 वर्ष पूर्व तक चला**। इस काल में पाए जाने वाले **पत्थर के औज़ार आमतौर पर छोटे होते हैं**, इन्हें **माइक्रोलिथि अथवा लघुपाषाण कहा जाता है** ।
- लघुपाषाण को संभवतः **हड्डी या काष्ठ हैंडल** पर **आरी और दरांती** जैसे उपकरण बनाए जाते थे ।

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/megalithic-site-in-kerala